www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2020**

TRANSCRIPT **Approximately 35–45 minutes**

This document has **8** pages. Blank pages are indicated.

© UCLES 2020

www.xtrapapers.com

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2020 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * नमस्कार। भारतीय स्टेट बैंक की ओर से आपका स्वागत है। यदि आप अपने बचत या जमा खाते के बारे में जानना चाहते हैं तो 1 डायल करें। यदि आप अपने क्रेडिट कार्ड की बकाया राशि के बारे में जानना चाहते हैं तो 2 डायल करें। यदि आप पैसा लगाने के बारे में सलाह लेना चाहते हैं तो 3 डायल करें। यदि आप कुछ और जानना चाहते हैं तो हमारे ग्राहक सेवा अधिकारी के खाली होने तक प्रतीक्षा करें। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिलाः भाई साहब, ये रबड़ी कब की बनी है?

पुरुषः अभी, लगभग एक घंटा पहले तैयार हुई है। वैसे भी हम पुरानी मिठाइयाँ नहीं बेचते।

महिलाः नहीं, गर्मी का मौसम है न, इसीलिए पूछ रही थी।

पुरुषः आपको रबड़ी घर ले जानी है या किसी को देनी है?

महिलाः जी, घर के लिए लेनी है और बाहर भी भेजनी है।

पुरुषः घर के लिए तो रबड़ी ठीक है। लेकिन बाहर भेजने के लिए कोई और मिठाई चुन लीजिए।

महिलाः क्यों, क्या रबड़ी शाम तक भी नहीं चलेगी?

पुरुषः रसगुल्ले तो चल सकते हैं। रबड़ी चार-पाँच घंटे से ज़्यादा नहीं टिकती। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

www.xtrapapers.com

FEMALE: **संवाद 3**

MALE: * यात्री कृपया ध्यान दें। नई दिल्ली से पटना होकर हावड़ा जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस शाम 4 बजकर 55 मिनट पर प्लेटफ़ॉर्म नंबर 14 से रवाना होगी। दिल्ली से जालंधर होकर ऊधमपुर जाने वाली माता एक्सप्रेस जम्मू-कश्मीर में हो रहे हिमपात के कारण बंद है। लखनऊ से कानपुर होकर नई दिल्ली आने वाली शताब्दी एक्सप्रेस तकनीकी गड़बड़ी के कारण एक घंटा देरी से आ रही है। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

MALE: **संवाद 4**

FEMALE: * महिलाःनमस्कार। इधर, कैमरे की तरफ़ देखिए।

पुरुषः ओह, माफ़ कीजिए मुझे कैमरे के बारे में मालूम नहीं था।

महिलाः नहीं, कोई बात नहीं। वैसे कहाँ से आ रहे हैं आप?

पुरुषः जी, लंदन से।

महिलाः आपका वीज़ा कहाँ है?

पुरुषः मुझे वीज़ा की ज़रूरत नहीं है। मैं तो विदेशी भारतीय नागरिक हूँ!

महिलाः तो फिर अपना विदेशी भारतीय नागरिकता का कार्ड दिखाइए।

पुरुषः जी, यह लीजिए!

महिलाः ठीक है। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

MALE: **संवाद 5**

FEMALE: * भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक देश बन गया है। दूरसंचार मंत्री मनोज सिन्हा ने बताया कि भारत ने मोबाइल फ़ोन उत्पादन के मामले में वियतनाम को पीछे छोड़ दिया है। भारतीय मोबाइल संघ के आंकड़ों के मुताबिक देश में मोबाइल फोन का वार्षिक उत्पादन 30 लाख से बढ़कर एक करोड़ 10 लाख हो चुका है जो वियतनाम से कहीं ज़्यादा है। देश में फ़ोन उत्पादन बढ़ने के कारण इनका आयात भी घटकर आधे से कम रह गया है। विश्व का सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक चीन है। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

FEMALE: **संवाद 6**

MALE: * पुरुषः बेटा, लगता है तुमको कहीं देखा है। क्या हम पहले मिल चुके हैं?

महिलाः हाँ अंकल, मुझे भी आपका चेहरा पहचाना हुआ सा लगता है।

पुरुषः कहीं तुम सुनीता के साथ तो नहीं पढ़ती थी?

महिलाः नहीं अंकल, मैं तो भोपाल में पढ़ी हूँ।

www.xtrapapers.com

पुरुषः अब समझा। भोपाल में तो मेरा भाई रहता है। गणित पढ़ाता है।

महिलाः नहीं अंकल, मैं तो सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में पढ़ती थी। आप भारत भवन जाते हैं क्या?

पुरुषः अरे! अब याद आया। तुम ही तो भारत भवन की भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आई थीं! **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 10 seconds]

FEMALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

कैलीफ़ोर्निया के तकनीक आविष्कार संग्रहालय के संग्रहपाल नील देसाई के साथ नए क्षितिज की संवाददाता प्रभा पाटिल की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * प्रभाः नील देसाई जी, नए क्षितिज के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

MALE: नीलः धन्यवाद, प्रभा जी।

प्रभाः नील जी, आपको अपने तकनीक आविष्कार संग्रहालय की बढ़ती लोकप्रियता और धाक की मुख्य वजह क्या लगती है?

नीलः आपकी बात सही है प्रभा जी। तकनीक आविष्कार संग्रहालय को बने लगभग बीस साल ही हुए हैं। फिर भी, हमारे कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जो हमें दूसरे संग्रहालयों से अलग और अनूठा बनाते हैं। जैसे, विज्ञान और तकनीक के कठिन विषयों को सरल और रोचक बनाना, नए आविष्कारों और समाधानों की खोज के लिए मंच प्रदान करना और जलवायु जैसे सामयिक विषयों के प्रति जागरूकता पैदा करना।

प्रभाः यानी आपका संग्रहालय वास्तव में एक तरह की प्रायोगिक पाठशाला है।

नीलः जी हाँ। एक ऐसी पाठशाला जो आपको तकनीकों और आविष्कारों के बारे में जानने के साथ-साथ नई तकनीकों के विकास में अपने हाथ आज़माने और नए सिरे से सोचने को प्रेरित करती है। मिसाल के तौर पर हमारी सोशल रोबोट गैलरी में आप दुनिया भर के कारख़ानों और मशीनों में काम करने वाले रोबोटों के बारे में जानने के साथ-साथ कोई नया रोबोट बनाने की कोशिश भी कर सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ पहले आप को आवश्यक बुनियादी प्रशिक्षण देते हैं। उसके बाद आप रोबोट बनाने की कोशिश कर सकते हैं।

प्रभाः बच्चों से हमने किसी साइबर जासूस प्रदर्शनी के बारे में भी सुना है।

नीलः जी हाँ। साइबर जासूस प्रदर्शनी में इंटरनेट सुरक्षा के बारे में सिखाया जाता है जो आजकल पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। इस प्रदर्शनी में पहले आपको सिखाया

www.xtrapapers.com

जाता है कि गुप्त संदेशों को कैसे खोलते हैं, ट्रोजन यानी छिपे प्रोग्रामों और वायरसों को कैसे पहचानते हैं और नेटवर्क को कैसे सुरक्षित करते हैं।

प्रभाः टैक-स्टूडियो के बारे में भी काफ़ी सुना है। वहाँ क्या होता है?

नीलः टैक-स्टूडियो एक विशालकाय गैलरी है जहाँ विज्ञान, तकनीकि, इंजीनियरी, गणित और कला से जुड़ी एक कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस कार्यशाला में लोगों को ऐसे कंप्यूटर ऐप बनाना सिखाया जाता है जिनसे सामाजिक मुद्दों को सुलझाने में मदद मिले। इसके अलावा निरंतर इस बात पर विचार किया जाता है कि समाज को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग कैसे करें।

प्रभाः यानी समाज को बदलने वाली तकनीकों का विकास करने की बजाए ऐसी तकनीक का विकास करने पर ज़ोर दिया जाता है जो समाज और परिवेश की ज़रूरतों को पूरा कर सके।

नीलः जी हाँ, इसी को समुचित तकनीक भी कहते हैं। इसके अलावा आजकल हमारे शरीर की दुनिया पर भी एक प्रदर्शनी चल रही है। इस प्रदर्शनी में आप अपने शरीर के भीतर जाकर देख सकते हैं कि हमारे अंग-प्रत्यंग किस तरह काम करते हैं। मानव त्वचा के नीचे छिपी इस दुनिया के रहस्य जानकर चिकित्सा के विद्यार्थी भी दाँतों तले उंगली दबाने लगते हैं।

प्रभाः और बाहर से यह जो गुंबद जैसा दिखाई देता है उसके भीतर क्या है?

नीलः इसमें अंतरिक्ष में दिलचस्पी रखने वालों के लिए एक गैलरी है जहाँ आप अमरीकी अंतरिक्ष संस्था नासा के यान की सवारी करके अंतरिक्ष यात्रा का रोमांचक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभाः नील देसाई जी, तकनीक आविष्कार संग्रहालय की इतनी रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

नीलः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

पश्चिमी अफ़्रीका के देश लाइबेरिया की किशोर फ़ुटबॉल खिलाड़ी जैसिका क्वाची के साथ खेल पत्रकार अतुल दास की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

www.xtrapapers.com

MALE: * अतुलः जैसिका क्वाची, खेल-जगत के मंच पर आपका स्वागत है।

जैसिकाः धन्यवाद, अतुल जी। भारत के खेल-प्रेमियों के बीच आकर अच्छा लग रहा है।

अतुलः हम सभी को बहुत अच्छा लग रहा है जैसिका। सबसे पहले तो अपने और अपने शहर के बारे में थोड़ा बताइए। हमारे युवा साथी आपके बारे में जानने को काफ़ी बेचैन हैं।

जैसिकाः तब तो उन्हें मायूसी ही होगी। क्योंकि मेरा परिचय कुछ ख़ास नहीं है। हमारा घर लाइबेरिया की राजधानी मनरोविया की एक कच्ची बस्ती में है। हमें बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए काफ़ी संघर्ष करना पड़ता है। घरों में शौचालय तक नहीं हैं।

अतुलः ऐसे में आपने फ़ुटबॉल खेलना कैसे और कहाँ से सीखा?

जैसिकाः इसकी भी एक लंबी कहानी है। मेरी माँ नहीं चाहती थीं कि मुझे भी उनकी तरह मछली बेच कर पेट पालना पड़े। इसलिए उन्होंने मुझे स्कूल में भर्ती करा दिया। वे बाज़ार से थक कर लौटतीं और घर के काम में जुट जातीं। वैसे स्कूल में तो मैं कुछ ख़ास नहीं सीख पाई, लेकिन स्कूल से घर लौट कर गली के बच्चों के साथ फ़ुटबॉल खेलना शुरू कर दिया।

अतुलः क्या मनरोविया में बच्चियाँ भी फ़ुटबॉल खेलती हैं?

जैसिकाः नहीं। यही तो समस्या थी। बस्ती के कुछ लड़के शाम को फ़ुटबॉल खेला करते थे। लेकिन वे मुझे अपने साथ खिलाने को राज़ी नहीं होते थे। उन्हें लगता था कि लड़कियों को फ़ुटबॉल नहीं खेलना चाहिए। यह उनका खेल नहीं है।

अतुलः तो फिर आपने क्या किया?

जैसिकाः कुछ नहीं, बस हार नहीं मानी। फ़ुटबॉल खेलने वाले लड़के मुझसे उम्र में भी काफ़ी बड़े थे। लेकिन मेरी ज़िद को देखते हुए पहले तो उन्होंने मुझे गेंद को उठा-उठा कर लाने का काम सौंपा। उसके बाद धीरे-धीरे मेरे पाँवों की फ़ुर्ती देखकर साथ में खिलाना भी शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में मैं उनको हराने लगी।

अतुलः यानी आपके भीतर फ़ुटबॉल खिलाड़ी की नैसर्गिक प्रतिभा थी। उसके बाद क्या हुआ?

जैसिकाः एक दिन मनरोविया की फ़ुटबॉल अकादमी के एक सदस्य ने मुझे खेलते हुए देख लिया। उन्होंने मुझे मैदान में खेलने का न्योता दिया। वहाँ मेरी कला देखकर वे दंग रह गए और उन्होंने मेरी माँ से संपर्क किया।

अतुलः और आपकी माँ की प्रतिक्रिया क्या थी?

जैसिकाः पहले तो माँ को समझ में ही नहीं आया कि अकादमी वाले चाहते क्या थे? वे भी यही समझती थीं कि फ़ुटबॉल तो लड़कों का खेल है। लेकिन अकादमी वालों ने उन्हें समझाया कि अकादमी में उनकी लड़की को फ़ुटबॉल के प्रशिक्षण के साथ-साथ पढ़ाया भी जाएगा। यह सुनकर वे तैयार हो गईं।

अतुलः तो, आप फ़ुटबॉल अकादमी में भर्ती हो गईं!

जैसिकाः जी हाँ। लेकिन मनरोविया की फ़ुटबॉल अकादमी में खेलने वाली मैं पहली लड़की थी। इससे पहले किसी ने लड़की को फ़ुटबॉल के मैदान में खेलते नहीं देखा था। मेरी लड़कों जैसी पोशाक देखकर लड़के मुझे लड़का कहकर चिढ़ाते भी थे।

अतुलः आपको बीबीसी ने वर्ष के सर्वश्रेष्ठ फ़ुटबॉल खिलाड़ी के पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया था। क्या आपको मिला वह पुरस्कार?

जैसिकाः नहीं, पुरस्कार तो नहीं मिला। हाँ, एक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहली बार विमान में सवारी करने का मौक़ा मिला। यह मेरे लिए रोमांचक अनुभव था।

www.xtrapapers.com

अतुलः अच्छा आपको फ़ुटबॉल के खेल का कौन सा पहलू सबसे रोचक लगता है?

जैसिकाः मुझे लड़कों को हराना अच्छा लगता है। मैं उनसे कतई नहीं डरती और उनसे बेहतर खेलती हूँ। यह सही है कि बड़े स्तर की प्रतियोगिताओं में लड़कों के साथ खेलने का अवसर नहीं मिलता। लेकिन घरेलू प्रतियोगिताओं में मैंने कई बार लड़कों को हराया है।

अतुलः जैसिका क्वाची, अपने जीवन और फ़ुटबॉल यात्रा पर रोचक बातचीत के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

जैसिकाः मुझे मंच देने के लिए आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 का यह संस्मरण अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

कारोबारों के सामाजिक दायित्व पर समाजशास्त्री धनंजय बागची के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * अगर इतिहास के पन्नों में लौटें तो ऐसा नहीं है कि लोक कल्याण के काम सिर्फ़ बड़े सोच रखने वाले महान लोगों ने ही किए हों। ऐसे कामों में कारोबारी लोग भी पीछे नहीं रहे।

सोलहवीं सदी में इस सिलसिले में राजस्थान में बावड़ी बनाने का काम काफ़ी हुआ, मकसद था सूखे धूल भरे मैदानों में पहुँचे घुमक्कड़ों की प्यास बुझाना। हालाँकि इस काम को तब कॉरपोरेट या कारोबारी जगत के सामाजिक दायित्व के रूप में नहीं देखा गया लेकिन इसके पीछे भावना बहुत कुछ वैसी ही थी। इसके बाद लोगों के सामने टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा का नाम सामाजिक दायित्व के मानक के रूप में सामने आया, जिन्होंने गाँधी जी के इस विचार को अपने दिल में बसा लिया कि व्यापारियों को इस तरह से काम करना चाहिए कि उनके पास जो धन है वह जनता का है और वे उसके रखवाले भर हैं।

हालांकि कॉरपोरेट या कारोबारी सामाजिक दायित्व अक्सर सुना जाने वाला जुमला है लेकिन इसे परिभाषित करना थोड़ा मुश्किल है। बॉस्टन विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ ब्रैडली गूगिंस कहते हैं, “बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि कारोबारी सामाजिक दायित्व का सवाल बहुत कुछ चैरिटी या लोकोपकार से जुड़ा है, लेकिन हकीकत में यह उससे कहीं बड़ी बात है। यह अपने नज़रिए को व्यापक बनाने की कोशिश है जिसमें हम देखते हैं कि कोई कंपनी अपने मूल्यों को व्यवहार में किस तरह अमल में लाती है, उनके उत्पाद किस तरह के हैं, कर्मचारियों से व्यवहार कैसे किया जाता है, पर्यावरण को लेकर नज़रिया क्या है और किस तरह से कंपनी चलाई जा रही है।”

www.xtrapapers.com

कारोबारी सामाजिक दायित्व को अगर समग्र रूप से देखा जाए तो इससे किसी भी कंपनी की छवि में सुधार तो होता ही है, इससे कर्मचारियों की भर्ती और उनके मनोबल पर भी असर पड़ता है। योग्य उम्मीदवार अब सिर्फ़ मोटी तनख्वाह की ही माँग नहीं करते बल्कि वे यह भी देखते हैं कि वे उसी कंपनी में काम करें जिसकी छवि भी सकारात्मक हो।

कारोबारी नेतृत्व को भी अब यह स्वीकार करने में हिचक नहीं रही कि इसके बारे में उनके पहले के प्रयासों में तालमेल और निरंतरता का अभाव था। अब उनको यह समझ में आ गया है कि महज़ परोपकारी संस्थाओं को चैक काट कर देने से ही कारोबारी ज़िम्मेदारियाँ पूरी नहीं होतीं। यह बात विदेशी कंपनियों के लिए कितनी अहम है, इसका अंदाज़ा इससे लग सकता है कि कारोबारी संघ ने अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभाने वाली विदेशी कंपनियों के लिए एक पुरस्कार रखा है जिसे वर्ष के अंत में दिया जाता है।

अमरीका की एक सलाहकार कंपनी इस पुरस्कार की विजेता कंपनियों में शामिल है। इस कंपनी ने अपनी कारोबारी सामाजिक ज़िम्मेदारियों को निभाने के लिए ज़मीनी स्तर पर काम शुरू करने का दृष्टिकोण अपनाया है। कंपनी के मुख्यालय की तरफ से आयोजित होने वाले राष्ट्रीय रक्तदान शिविरों में हमेशा ही भारी तादाद में लोग हिस्सा लेते आए हैं। इसके अलावा यह कंपनी अखिल भारतीय दृष्टिबाधित महासंघ में रोज़गार के लिए चल रहे कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम को भी आर्थिक और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है।

यह सलाहकार कंपनी ऐसी मानव संसाधन एजेंसियों के साथ मिलकर काम करती है जो खुद के लिए कर्मचारी चुनने के साथ-साथ दूसरे कारोबारी क्षेत्रों में भी पहुँचती हैं। वहाँ उनकी कोशिश इस तथ्य को सामने लाने की होती है कि किस तरह दृष्टिदोष के शिकार व्यक्ति भी कर्मचारी के रूप में समाज के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं। कंपनी ने इसी तरह का एक स्नातक अपने ऑफ़िस के लिए भी चुना है जबकि कई दूसरे विद्यार्थियों को आईटी कंपनियों में तकनीकी लेखक और कॉल सेंटर कर्मचारी के रूप में चुना गया है।

दृष्टिबाधित महासंघ के अधिकारी ऐसे मददगारों से उकता चुके हैं जो दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को खाना खिलाने का प्रस्ताव करते हैं। वे कहते हैं, "सभी उन्हें भोजन और आवास देने को तैयार हैं लेकिन कोई भी उन्हें इस ढंग से प्रशिक्षित नहीं करना चाहता कि वे बाज़ार में अपने दम पर मुक़ाबले में खड़े हो सकें।" अपना प्रशिक्षण पूरा करने वाले स्नातकों के लिए यह ऐसा उपहार है जो जीवन भर के लिए है। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।

This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.